सिंचाई – घृतकुमारी की खेती के लिए सिंचाई की आवश्यकता लगभग न के बराबर होती है। आवश्यकतानुसार समय–समय पर हल्का हल्का पानी दिया जा सकता है। यदि ग्वारपाठा का रोपण ग्रीष्म ऋतु में किया जा रहा है तो सिंचाई की आवश्यकता पड़ती है।

निदाई–गुड़ाई– रोपण के एक माह पश्चात् निदाई–गुड़ाई की जानी चाहिए जिससे कि खरपतवार फसल की वृद्धि में विपरीत प्रभाव न डाल सकें। इसके उपरान्त आवश्यकतानुसार निदाई–गुड़ाई की जानी चाहिए।

रोग व रोकथाम – प्रायः इस पर किसी भी प्रकार का रोग व कीट का प्रभाव नहीं पड़ता है। परन्तु यदि कीड़ों का प्रकोप दिखाई दे तो ऐसी स्थिति में मोनोक्रोटोफास का छिड़काव करना चाहिए। प्रायः इसकी फसल को कोई पशु नहीं खाते हैं, परन्तु यदि खेत में पशुओं का आवागमन रहता है तो इसके पत्ते टूट जाते हैं जिससे फसल को नुकसान होता है।

दोहन व संग्रहण – कम से कम एक वर्षीय अथवा 15 माह आयु का पौधा कटाई के लिये परिपक्व हो जाता है। पौधे लगाने के एक वर्ष के उपरान्त प्रत्येक तीन माह पश्चात् प्रत्येक पौधें की 3–4 पत्तियों को छोड़कर शेष समस्त परिपक्व पत्तियों को तेज धारवाले हँसिये से काट कर संग्रहित कर लेना चाहिए। पत्तियों का संग्रहण एवं भण्डारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि पौधे की पत्तियों को कम से कम क्षति हो।

उत्पादन व उपज – घृतकुमारी की खेती करने से वर्षभर में लगभग 450–500 क्विंटल मांसल ताजे पत्ते प्रति हेक्टेयर की दर से प्राप्त होते हैं।

बाजार मूल्य – घृतकुमारी की पत्तियों के बाजार मूल्य में समय–समय पर उतार–चढ़ाव आते हैं। वर्तमान बाजार मूल्य 3–6 रू. प्रति किलोग्राम तक होता है। घृतकुमारी की खेती में रूचि रखने वाले कृषकों को इसकी विपणन व्यवस्था के बारे में जानकारी एकत्र कर लेनी चाहिए। यदि विपणन की व्यवस्था खेती किये जाने वाले स्थान से अत्यधिक दूर है तो इसकी पत्तियों के परिवहन में कठिनाईयाँ आती हैं तथा व्यय भी अधिक होता है, जिसके कारण कृषक को अपनी फसल का समुचित मूल्य नहीं मिल पाता है। ग्वारपाठा की एक हेक्टेयर की खेती में लगभग रू. 45,000/– का व्यय होता है तथा लगभग रू. 1,50,000/– की प्राप्ति होती है। इस प्रकार कृषक लगभग रू. 1,00,000/– प्रति हेक्टेयर का लाभ अर्जित कर सकता है।

संकलन एवं संपादन :

डॉ. ए. के. पाण्डे

अधिक जानकारी के लिये संपर्क करें

निदेशक

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840483, 4044002

वन विस्तार प्रभाग

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

पो.आ. – आर.एफ.आर.सी,

मण्डला रोड, जबलपुर – 482021

फोन : 0761–2840627

Amrit Offset # 2413943

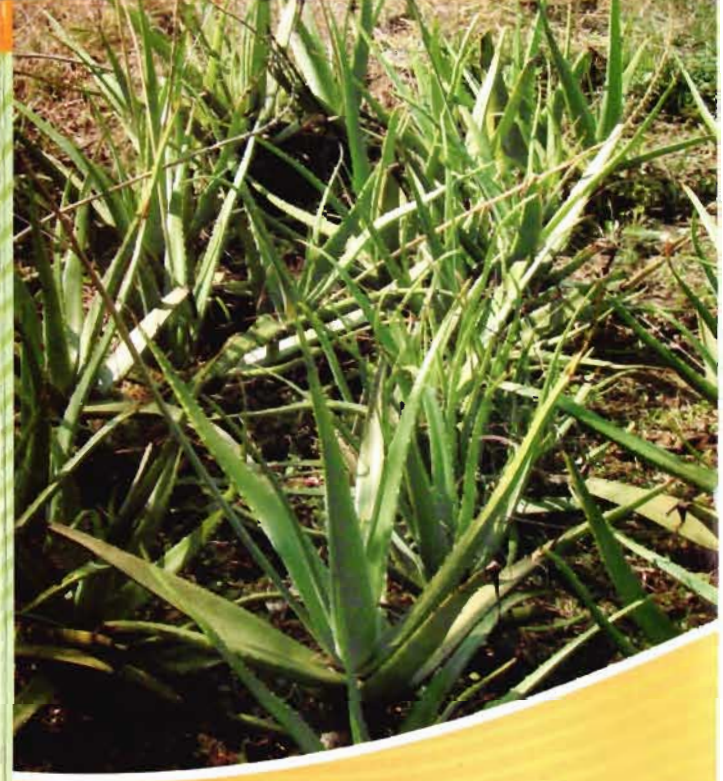

घृत कुमारी

Aloe vera

उष्णकटिबंधीय वन अनुसंधान संस्थान

(भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद)

डाकघर – आर.एफ.आर.सी. मण्डला रोड

जबलपुर – 482 021 (म.प्र.)

परिचय :

यह पादप समुदाय में लिलियेसी (*Liliaceae*) कुल का पौधा है। इसका वानस्पतिक नाम ऐलोवेरा (*Aloe vera*) है। यह उत्तरी अमेरिका एवं स्पेन का पौधा है। यह भारत ही नहीं अपितु सम्पूर्ण विश्व भर में ऐलॉए (Aloe) के नाम से विख्यात है। घृतकुमारी एक मरूदभिद् (Xerophytic) पौधा है। यह संपूर्ण भारत वर्ष में प्राकृतिक रूप में मिलता है। भारत के अतिरिक्त यूरोप, उत्तरी अमेरिका, स्पेन, थाइलैंड, चाइना, वेस्ट इंडीज आदि देशों में भी पाया जाता है।

यह संस्कृत भाषा में घृतकुमारी; हिन्दी में ग्वारपाठा, घीकुऑर; गुजराती में कुंवारपाठा; बंगला में घृतकुमारी; मराठी में कोरफड; पंजाबी में कुंवारमंदल; तेलगू में पिन्नगोरिष्ट कलवन्द; मलयालम में कुमारी; कन्नड़ में लोधीसर एवं अंग्रेजी में **Aloe vera** इत्यादि अनेकों भाषाओं में जन सामान्य में प्रचलित है।

यह एक बहुवर्षीय, मॉसलयुक्त 1 से 3 फुट ऊँचे, भालाकार, कण्टकित, धारदार पत्तों से युक्त रहता है। घी सदृश पिच्छिल पीले से रंग का स्त्राव मॉसल पत्तो में भरा रहता है। इसके बड़ी आयु के पौध के मध्य भाग में हल्के श्वेत पीले अथवा नारंगी रंग के पुष्प जनवरी – फरवरी माह में निकलते हैं तथा इसमें लाल–पीले रंग के फलीयुक्त गंदले रहती हैं।

औषधीय उपयोग :

यह तिक्त (कडुवा), कटु ज्वर से संबंधित रोग, जलने कटने पर ठंडक देता है। सौंदर्य प्रसाधनों के निर्माण में इसका उपयोग होता है। पत्तियों का जेल क्रीम के रूप में, चेहरे की त्वचा साफ तथा मुलायम करने एवं कील–मुंहासे ठीक करने में उपयोग होता है।

पत्तों में लगभग 94 प्रतिशत पानी तथा शेष अमीनो ऐसिड व कार्बोहाइड्रेट्स होते हैं। ग्वारपाठा में एलोन नाम का ग्लूकोसाइड समूह बहुतायत में पाया जाता है। इसका मुख्य घटक बार्बेलाइन अथवा बारबोलिन नामक हल्के पीले रंग का स्फटकीय ग्लूकोसाइड होता है। इसके साथ ही इसमें आइसो बारबोलीन, ऐलोइमोटीन, गैलिक अम्ल, राल एवं एक सुगंधित तेल भी पाया जाता है। इसमें विद्यमान तेल की मौजूदगी ही इसकी गंध की विशेषता है। घृतकुमारी के पत्तों का रस तथा गूदा (जेल) व पौधों की जड़ों को अग्निमाघ, चर्मरोगों, अग्निदग्ध, उदरशूल, कृमिघ्न, गर्म स्भावकर, शोथहर, रक्तशोधक, महिलाओं के रोगों के उपचार में प्रयोग में लाया जाता है। सिरदर्द, फोड़े के घाव, सूजन एवं गाठों पर मोंच आ जाने या अंदरूनी चोट, नेत्र रोग, रक्त परिभ्रमण, प्लीहा वृद्धि, बवासीर, खांसी रोगों के उपचार में अति प्रभावकारी औषधि के रूप में काम करता है।

शरीर में पौष्टिकता प्रक्रियाओं के विकारों के पुनर्स्थापन के लिए इसके पत्ते अत्यंत लाभकारी है। शहद के साथ इसके भुने हुये पत्ते का रस लेने से किसी भी प्रकार की खांसी व कफ में आराम मिलता है। एक पत्ते का ताजा गूदा दैनिक रूप से लेने से गठिया, कटिवात व जोड़ों के दर्द में काफी आराम मिलता है।

इसके पत्तों से प्राप्त जेल (गूदा) बच्चों की आंतों में कीड़ों/कृमि निकालने का घरेलू उपचार है। इसका गूदा त्वचा/शरीर के जले घावों व दर्द के उपचार का भी अचूक नुस्खा है। जले घावों पर इसका ताजा रस शीतलता के साथ स्निग्धता तथा घाव के दाग शीघ्र साफ करने में मदद करता है।

पुरातन समय से इसका उपयोग सलाद के रूप में भी किया जाता रहा है। इसका प्रयोग खाद्य व्यंजनों जैसे– मठरी, रोटी, लड्डू, हलुआ, शरबत, अर्क इत्यादि में किया जाता है। यह व्यंजन राजस्थान में अत्यधिक लोकप्रिय है।

कृषि तकनीक :

भूमि व जलवायु – घृतकुमारी की खेती करने के लिए सिंचित व असिंचित दोनों प्रकार की भूमि उपयुक्त होती है, परन्तु असिंचित भूमि इसकी खेती के लिए अधिक उपयोगी है। ग्वारपाठा की खेती के लिए अच्छी जल निकास वाली भूमि उपयुक्त मानी जाती है। ऐसी जमीन जिसमें पानी भर जाता है, में पौधों की जड़ों के सड़ने का खतरा बना रहता है। प्रायः ग्वारपाठा की खेती के लिए किसी भी जैविक सुरक्षा, खाद अथवा कीटनाशक की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

खेत की तैयारी – घृतकुमारी की खेती के लिए चयनित खेत को 2–3 बार गहरे हल द्वारा जुताई कर तैयार कर लेना चाहिए। इसके उपरान्त आवश्यकतानुसार प्रति हेक्टेयर लगभग 8–10 क्विंटल गोबर की पकी खाद मिलाकर भूमि तैयार कर लेना चाहिए।

प्रवर्धन – घृतकुमारी का प्रवर्धन छोटे कंदों, बलबिल्स द्वारा किया जा सकता है। यह बलबिल्स घृत कुमारी की खेती कर रहे कृषकों/अनुसंधान संस्थानों से प्राप्त किये जा सकते हैं।

रोपण – घृतकुमारी के छोटे पौधों का रोपण वर्षाकाल जुलाई–अगस्त माह में किया जाना चाहिए। पौधों को क्रमबद्ध तरीकों से पंक्तियों में लगाना चाहिए। छोटे पौधे, बलबिल्स का रोपण करते समय पंक्ति से पंक्ति की दूरी 30 से 45 से.मी. एवं पौधे से पौधे की दूरी 30 से.मी. होनी चाहिए। इस प्रकार एक हेक्टेयर खेत में लगभग 40–50 हजार पौधों की आवश्यकता होती है। यह दूरी भूमि की उपजाऊ क्षमता व सिंचाई के साधनों के हिसाब से घटाई–बढ़ाई जा सकती है।